समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ फरवरी २०२५ ● वर्ष : २८ ● अंक : ०८ (निरंतर अंक : ३३२) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

उन्नति के ५ सूत्र

ये ५ बातें जितनी जल्दी आत्मसात् करोगे उतनी ही जल्दी निर्दुःख हो जाओगे । - पूज्य बापूजी

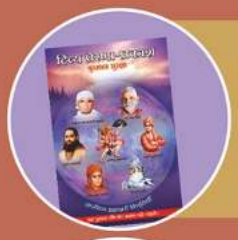

पवित्र चरित्र

इन्द्रिय-संयम

सद्भाव

विवेक की सजगता

अनहंकार

साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का प्राकट्य दिवस : २४ मार्च

श्रीराम नवमी : ६ अप्रैल

रामावतार मध्याह्नकाल में क्यों ? ६

महापुरुषों की कैसी व्यापक दृष्टि ! ७

शरीर व मन को स्वस्थ रखने के लिए... १५

भगवान दूर कैसे हो जाते हैं ? १७

...फिर देखो सब कैसे ठीक चलता है !

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग-वचनामृत से

परमात्मा कहाँ रहता है ? परमात्मा सामान्य रूप से तो सब जगह रहता है लेकिन विशेष रूप से प्रकट होता है हृदय में। **ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।** (गीता : १८.६१)

भगवान हृदय में रहता है। आप भी हृदय में रहो क्योंकि यह विशेष अनुभव की जगह है। सुख-दुःख, लाभ-हानि के जो भी प्रसंग होते हैं वे बाहर होते हैं, घटनाएँ तो बाहर घटती हैं किंतु अनुभव हृदय में होता है। जैसे स्पर्श-इन्द्रिय तो सारे शरीर में है परंतु शरीर पर मिठाई रखो तो मीठी नहीं लगेगी, नमकीन रखो तो उसका स्वाद नहीं आयेगा किंतु जिह्वा पर रखो तो तुरंत पता चलेगा कि चीज मीठी है या खारी है। ऐसे ही आप अगर हृदय में रहते हैं तो आपको पता चल जायेगा कि यह विषयों का सुख है, कल्पनाओं का सुख है, कामनाओं का सुख है, भावनाओं का सुख है या भगवान का सुख है।

अगर आप हृदय में रहना सीखेंगे तो किसी भी घटना के घटने पर तुरंत पता चलेगा कि अब हृदय में क्या हुआ। फलाने ने दुःखद समाचार सुनाया लेकिन अब क्या हुआ। **दुःख आ गया, कोई हरकत नहीं किंतु दुःख को देखने की युक्ति आ गयी तो आप उससे अलग हो गये।** विषय का सुख आ गया, कोई हरकत नहीं लेकिन विषय के सुख को देखने की युक्ति आ गयी तो आप उससे पृथक् हो गये। जो व्यक्ति इनसे पृथक् होकर देखता है वह इनका उपयोग ठीक से कर सकता है।

संसार से भी पृथक् होकर रहना है। संसार से पृथक् होकर कहाँ रहेंगे, कहाँ जायेंगे ? जहाँ भी जाओ, शरीर है तो वहाँ संसार होगा ही, पृथ्वी होगी, सूर्य की किरणें होंगी, पानी लेना पड़ेगा। घर छोड़ के झोंपड़ा, झोंपड़ा छोड़ के और कोई गुफा... पवित्र देश में मन पवित्र होता है, एकांत देश में भगवत्प्राप्ति में सुविधा होती है यह बात सही है परंतु एकांत का बाहरी अर्थ लेकर संसार से पृथक् नहीं हुआ जा सकता। **एक तो बाह्य एकांत होता है, दूसरा सब विचारों का एक में ही अंत कर दें - हृदय में, साक्षीस्वरूप में, वह बढ़िया एकांत है, परम एकांत है।** एक में ही सब विचारों का अंत - आँख अनेक रूप देखती है पर देखनेवाला मैं एक। कान अनेक शब्द सुनते हैं, सुननेवाला मैं एक। नाक अनेक प्रकार की गंध लेती है, गंध का द्रष्टा मैं एक। सुख-दुःख के प्रसंग अनेक, उनको देखनेवाला मैं एक।

तो अपने स्थान पर, आत्मभाव में बैठे-बैठे आप आनेवाले सुख को भी देखो और दुःख को भी। वे तो जा ही रहे हैं, आप सिर्फ अपने आत्मस्वरूप में निश्चिंत रहो, फिर देखो सब कैसे ठीक चलता है ! ॐ ॐ ॐ... नारायण... नारायण... नारायण...

रजि. समाचार पत्र

लोक कल्याण सेतु

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २८ अंक : ८
निरंतर अंक : ३३२ आवधिकता : मासिक
प्रकाशन दिनांक : १५ फरवरी २०२५ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

सम्पर्क पता :

'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ६१२१०७३९

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹१९५		
(४) आजीवन :	₹४७५		

✲ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ✲

अनादि	डिजियाना दिव्य ज्योति	Asharamji Bapu	सेवाकार्य भी Asharamji Ashram	Mangalmay Digital
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे	रोज रात्रि १० बजे	यूट्यूब चैनल्स		

✲ 'अनादि' चैनल टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है। ✲ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

लोक कल्याण सेतु ई-मैगजीन के रूप में भी पढ सकते है। ई-मैगजीन अथवा हार्ड कॉपी के सदस्य बनने के लिए क्लीक करो...

www.lokkalyansetu.org

लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष मनका योजना :

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

इस अंक में...

- ये ५ बातें जितनी जल्दी अपनाओगे...

कवर स्टोरी अपने जीवन में ये ५ बातें जरूर रख लो, ये उन्नति के ५ नियम हैं। एक तो अपना चरित्र पवित्र रखें। दुर्गुण-दुराचार से सुखी होने की गलती न करें। दूसरी बात, इन्द्रियों पर संयम रखें। मन में जैसा भी आया सुखी होने के लिए कर्म-कुकर्म कर लिया... ४

- संगठित रहकर संस्कृति की सेवा में सजग रहें....................५
- चंचलता मिटाओ, मुक्ति पाओ.................................. ६
- रामावतार मध्याह्नकाल में क्यों ?................................ ७
- महापुरुषों की कैसी व्यापक दृष्टि ! – स्वामी अखंडानंदजी.....९
- इससे ईश्वर के सिवा किसीकी याद नहीं आयेगी..............१०
- सूरत में सम्पन्न हुआ ५ दिवसीय 'ध्यान योग साधना शिविर'....................११
- कर्म का फल मिलता ही है....................................... १२
- उत्तरायण शिविर में बही ज्ञान, भक्ति व सेवा की त्रिवेणी........................१४
- नासमझी से काम लम्बा हो जाता है............................१५
- आत्मनिर्माण हेतु सहायक सूत्र – स्वामी शरणानंदजी.........१६
- भारतीय कालगणना क्यों है श्रेष्ठ ?............................ १७
- शरीर व मन को स्वस्थ रखने के लिए रखें इन बातों का ध्यान – संत देवराहा बाबा............ १९
- भगवान दूर कैसे हो जाते हैं ?.................................. २३

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम | **प्रकाशक और मुद्रक :** राकेशसिंह आर. चंदेल | **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) | **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५ | **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी

Email: lokkalyansetu@ashram.org, ashramindia@ashram.org Website: www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org

पूज्य बापूजी के श्रीमुख से निःसृत अमृतवाणी

ये ५ बातें जितनी जल्दी अपनाओगे उतनी जल्दी निर्दुःख होओगे !

अपने जीवन में ये ५ बातें जरूर रख लो, ये उन्नति के ५ नियम हैं।

एक तो **अपना चरित्र पवित्र रखें ।** दुर्गुण-दुराचार से सुखी होने की गलती न करें।

दूसरी बात, **इन्द्रियों पर संयम रखें ।** मन में जैसा भी आया सुखी होने के लिए कर्म-कुकर्म कर लिया । इससे भविष्य अंधकारमय होता है । खान-पान में संयम करो, १५ दिन में एक बार एकादशी का व्रत रखो।

तीसरी बात, **सबके प्रति सद्भाव हो ।** किसीके प्रति दुर्भाव नहीं हो, कोई हमारे लिए चाहे कैसा भी सोचे लेकिन हम सोचें कि 'उसकी गहराई में सच्चिदानंद परमात्मा है ।' हम सावधान भले रहें किंतु सद्भाव-सम्पन्न रहें।

चौथी बात, **बुद्धि को विवेकवती बनायें, विवेक को सजग रखें ।** बौद्धिक विचार करें कि 'आखिर यह सब कब तक ? यह शरीर और संसार कब तक ? सुख-दुःख को सत्य मानकर उलझना कब तक ?' बुद्धि का उपयोग सार तत्त्व (परमात्म-तत्त्व) को जानने में करें। 'यह पाना है, ऐसा बनना है, यहाँ जाना है, ऐसा करना है...' समझो जो पाना चाहते हो वह पा लिया, जैसा बनना चाहते हो वैसा बन गये। फिर क्या ? ततः किं ततः किम्... आद्य शंकराचार्यजी के गुर्वष्टकम् का विचार करो। कितना भी बाहर का करो लेकिन तुमने वासना निवृत्त करके आत्मा में, गुरु-तत्त्व में विश्रांति नहीं पायी तो आखिर क्या हुआ ?...

पाँचवीं बात, **अहंभाव जो सब सद्गुणों को और सामर्थ्य को निगल जाता है उससे बचें ।** मन ऐसी बदमाशी करवाता है कि अच्छा काम होता

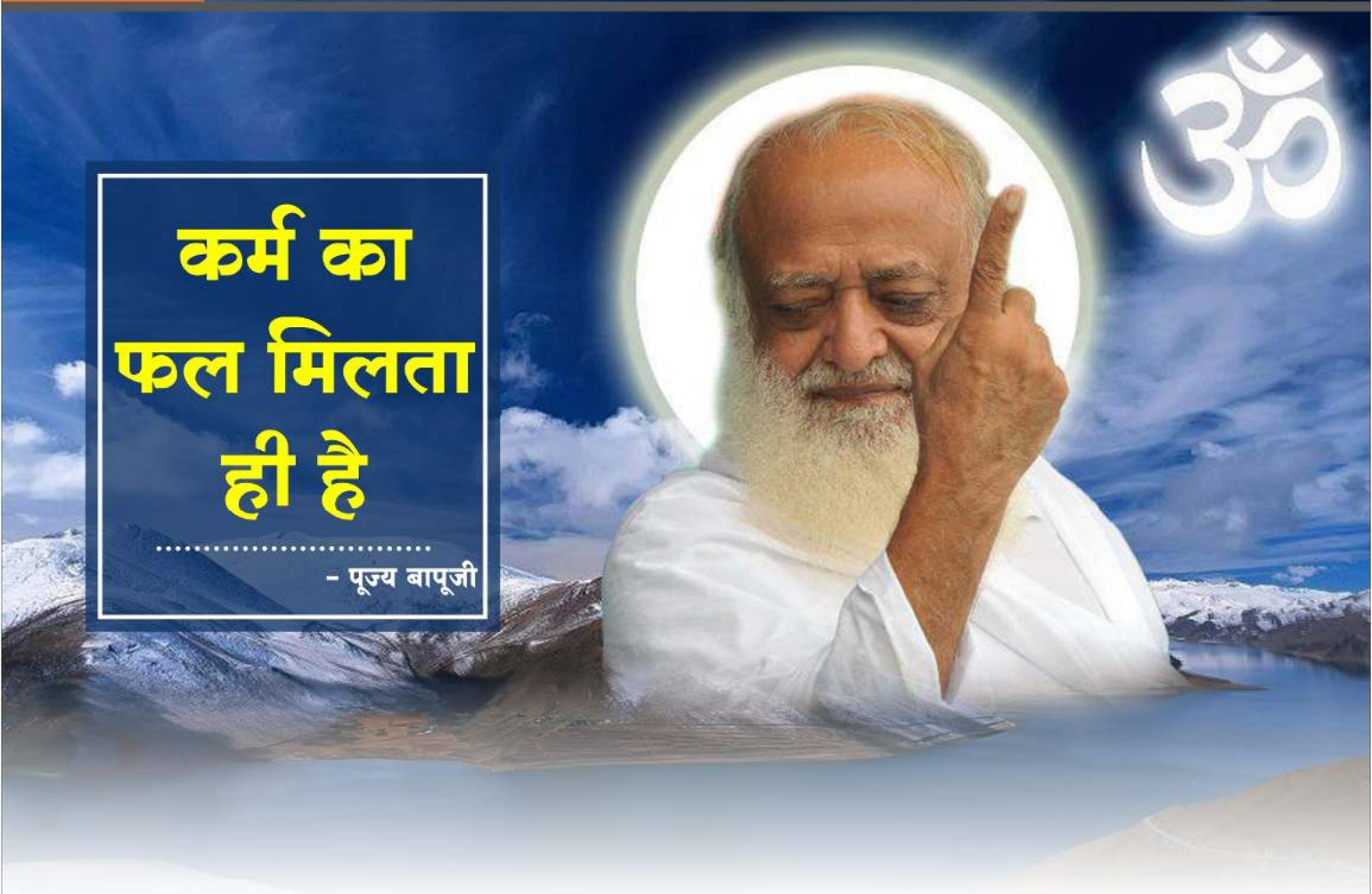

कर्म का फल मिलता ही है

- पूज्य बापूजी

यह जरूरी नहीं कि धनवान लोग ही भक्ति कर सकते हैं। नहीं, धनवान को तो भक्ति करने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। धनवान के पास जो धन है उसका परहित में त्याग करेगा तभी भक्ति का रंग लगेगा, सत्तावाले के पास जो सत्ता है उसके अभिमान का त्याग करेगा तभी उसको भक्ति का रंग लगेगा और जिसके पास है ही नहीं उसको त्याग करने की मेहनत ही नहीं!

धन है और उसको सत्पात्रों में दान नहीं करता है तो उसका धन उसके लिए बोझा हो जाता है। जिसके पास धन है वह उसे अच्छे काम में नहीं लगाता है तो दूसरे जन्म में उसकी बड़ी बुरी हालत होती है लेकिन जिसके पास धन नहीं है उसके लिए धन अच्छे काम में लगाने का कायदा भी नहीं है। जितना माल होता है उतना टैक्स पड़ता है, जितना नफा होता है उतना इनकम टैक्स (आयकर) भरना पड़ता है।

जिसके पास कम धन है, खानेभर को है उसकी भक्ति जल्दी हो सकती है और जिसके पास खूब धन है, जो लोभी है, जो दूसरों का खून चूस-चूस के अमीर हो जाता है वह मरने के बाद भी सुखी नहीं रहता है!

कोलकाता में एक करोड़ीमल सेठ थे। दुकान में बैठकर बस ग्राहकों का खून चूसा, खूब पैसा इकट्ठा किया। फिर मोटरपार्ट्स का कारखाना खोला। एक कारखाना खोला, दो खोले... ऐसा करते-करते करोड़पति सेठ हो गया।

करोड़पति हो या लखपति हो, मारवाड़ी हो चाहे जैन हो, हिन्दू हो चाहे ईसाई हो... कोई भी हो, मरना तो सबको है, वह सेठ मर गया। यम के दूत उसको पकड़ के ले गये। सेठ देखता है कि जितने व्यक्तियों का खून चूसा है, जितनों का शोषण किया है वे सब बड़े कुंडों में पड़े हैं। उस सेठ को कुंड में डाला। वे नोच-नोच के खाने लगे। 'ओ बाबा रे! मर गये रे... ओ मर गये...!' सेठ चिल्लाता है। यमदूत सोंटा मारते हैं कि खून चूसा

नासमझी से काम लम्बा हो जाता है

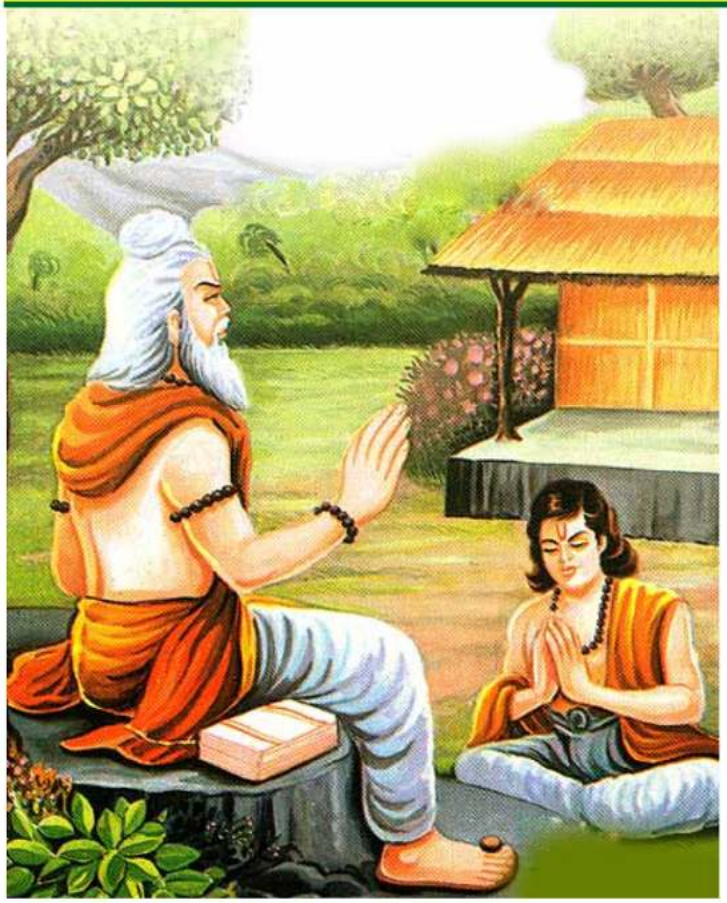

एक शिष्य था। वह अपने गुरुजी के पास गया। गुरुजी ने उसको पहले-पहल ही उपदेश किया : ''तुम ब्रह्म हो।''

शिष्य : ''हाँ महाराज ! मैं ब्रह्म हूँ। मैंने बिना सोचे-विचारे ही अपने को जीव मान रखा था। अरे ! कहाँ जीव देखा था ? जीव का फोटो कहाँ लिया था कि मैं कर्ता हूँ कि भोक्ता हूँ कि संसारी हूँ कि परिच्छिन्न (सीमित) हूँ कि स्वर्ग-नरक में जाने-आनेवाला हूँ या पुनर्जन्मवाला हूँ - ये सब फोटो मैंने कहाँ लिये थे ? मैंने तो किसीके कहने से मान लिया था। मैं तो अनंत-आकाश हूँ, चिदाकाश हूँ, अद्वितीय, निर्मल सच्चिदानंदघन ब्रह्म हूँ। नमस्कार ! अब मैं जाता हूँ।''

''जरा ठहर भाई ! इतनी जल्दी क्यों जाता है ?''

''महाराज ! मैं तो सच्चिदानंदघन ब्रह्म हूँ। मुझमें तो गति ही नहीं है। मुझमें आना-जाना कहाँ है ?''

''ठीक है कि आना-जाना नहीं है परंतु थोड़ा विवेक तो कर।''

''मेरे स्वरूप में विवेक कहाँ है ?''

''अपने को ब्रह्म जान गया ?''

''मुझे विशेष क्यों बनाते हैं ? मैं तो निर्विशेष ब्रह्म हूँ।''

''अच्छा बेटा ! जा ! साधो ! साधो !!''

यह तो बेवकूफी से काम बहुत बढ़ जाता है। नासमझी से काम बहुत लम्बा हो जाता है। समझदारी से वही काम मिनटों में खत्म हो जाता है। इसलिए समझदारी बढ़ानी चाहिए। यह तर्क-वितर्क सब अविवेक है। जिन लोगों को तर्क से प्रेम हो जाता है उनको ज्ञान होने में कठिनाई होती है। यदि आपको कोई उलझी हुई गाँठ खोलनी हो - सुलझानी हो तो उसको समझ लो। एक सेकंड में गाँठ खोलनी हो - सुलझानी हो तो उसको समझ लो। एक सेकंड में गाँठ सुलझ जायेगी। यदि नहीं समझोगे तो ऐसी उलझ जायेगी कि दूसरे से भी नहीं खुलेगी। यह सब समझ का ही फेर है।

जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई।
जदपि मृषा छूटत कठिनई॥

(रामचरित. उ.कां. : ११६.२)

जड़-चेतन में गाँठ पड़ गयी है। गाँठ सच्ची नहीं है, झूठी है। अब झूठी गाँठ खोलने के लिए इधर से उधर, उधर से इधर सूत को उलझाओ तो और उलझ जाय। अरे ! वह तो रोशनी में देख लो कि गाँठ नहीं है। ऐसे ही गुरुज्ञान के प्रकाश में चित्-जड़ ग्रंथि की उलझन को सुलझा लो बस !

भारतीय कालगणना

क्यों है श्रेष्ठ ?

(अंक ३३० का शेष)

ब्रह्मांडीय समय (cosmic time)

भारतीय कालगणना ब्रह्मांडीय समय को भी परिभाषित करती है । इसे युग और कल्पों में विभाजित किया गया है :

युगों का विवरण :

१. कृतयुग (सतयुग) : १७,२८,००० वर्ष

२. त्रेतायुग : १२,९६,००० वर्ष

३. द्वापरयुग : ८,६४,००० वर्ष

४. कलियुग : ४,३२,००० वर्ष

महायुग : चारों युगों का योग = ४३,२०,००० वर्ष

कल्प : १ कल्प अर्थात् ब्रह्माजी का १ दिन = १००० महायुग = ४३२ करोड़ वर्ष

पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है

शरीर व मन को स्वस्थ रखने के लिए रखें इन बातों का ध्यान

(संत देवराहा बाबा की वाणी से)

मन को प्रसन्न एवं स्वस्थ रखने का पहला उपाय है – शरीर को स्वस्थ रखना। शरीर वह रथ है जिस पर बैठकर जीवन की यात्रा करनी होती है। शरीर एक चलता-फिरता देव-मंदिर है, जिसमें स्वयं भगवान अपनी विभूतियों के साथ विराजते हैं। अतः मन की निर्मलता और बुद्धि की शुद्धता का साधन शरीर से प्रारम्भ होता है। शरीर तो एक साधन मात्र है जिसकी सहायता से परम साध्य को प्राप्त करने के लिए योग, तप, जप आदि किया जाता है। इस साधनरूपी शरीर को स्वस्थ और पवित्र रखने से ही योग की शुरुआत होती है।

मांसाहार, शराब, धूम्रपान... ये सभी रोगों की

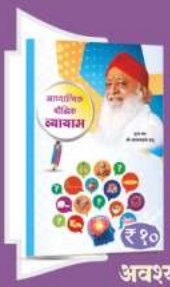

आध्यात्मिक बौद्धिक व्यायाम

इसमें आप पायेंगे : बौद्धिक विकास व आध्यात्मिक उन्नति में सहायक खेल, पहेलियाँ, सत्संग आदि

इनमें आप पायेंगे :
* वास्तविक सौंदर्य प्राप्त करने की कुंजी * युवतियाँ, महिलाएँ कैसे अपने जीवन का सर्वांगीण विकास कर उन्नत हो सकती हैं ?

अवश्य पढ़िये ये कल्याणकारी साहित्य

माँ ! तू कितनी महान..., नारी ! तू नारायणी, तेजस्विनी भव !

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए

आँवला कैंडी

सेहत और स्वाद का संगम

पुष्कर आश्रम गौशाला से जुड़ी जंगल की शुद्ध भूमि, जो गोधूलि, गौ-खाद, अन्य शुद्ध खाद, अत्यंत शुद्ध जल से सम्पन्न है, उसमें उपजे ताजे आँवलों से तैयार की गयी यह कैंडी स्वास्थ्य एवं साधना में सहायक है । यह स्वादिष्ट, शक्तिप्रद एवं विटामिन 'सी' से भरपूर है । बच्चों को बाजारू टॉफियों से बचाने हेतु यह स्वास्थ्यवर्धक उत्तम विकल्प है ।

स्वास्थ्य, शक्ति एवं विटामिन B_{12} वर्धक टॉनिक

संजीवनी रस

* यह एक सुमधुर व सुगंधित पेय है । * इसमें पाये जानेवाले सोना और चाँदी शरीर के निर्माण, मस्तिष्क के पोषण और याददाश्त तथा बुद्धि बढ़ाने में मदद करते हैं । * इसमें निहित शिलाजीत ह्यूमिक एसिड और फुल्विक एसिड का एक उत्तम स्रोत है, जो विषनाशक, एंटी ऑक्सीडेंट और स्फूर्तिदायक गुणों के लिए जाने जाते हैं । * यह B_{12} सहित 'B ग्रुप' के अन्य विटामिन्स एवं कैल्शियम, सेलेनियम, आयरन एवं पोटैशियम आदि खनिजों का उत्तम स्रोत है । * यह शरीर को स्वस्थ रखने एवं बल बढ़ाने में सहायक है । * मोटापा, रक्ताल्पता, यकृत-विकार, पथरी, एड्स, कैंसर, हार्ट ब्लॉकेज, लकवा आदि गम्भीर रोगों में राहत एवं सुरक्षा प्रदान करने में सहायक है ।

तुलसी अर्क

स्मृतिवर्धक, रक्तशुद्धिकर व विविध रोगों में लाभदायी

तुलसी अर्क स्मृति, सौंदर्य व बल वर्धक तथा कीटाणु और विष नाशक है । यह हृदय के लिए हितकर तथा ब्रह्मचर्य-पालन में सहायक है । यह रक्त में से अतिरिक्त स्निग्धांश (LDL) को हटाकर रक्त को शुद्ध करता है । सर्दी-जुकाम, खाँसी, बुखार, दस्त, उलटी, हिचकी, दमा, मुख की दुर्गंध, मंदाग्नि, पेचिश, कृमि, स्मृतिह्रास आदि रोगों में लाभदायी है ।

कर्ण बिंदु

यह कान का दर्द, उसमें सूजन व खुजली होना, कानों में सतत भनभनाहट की ध्वनि सुनाई देना (tinnitus) आदि समस्याओं में लाभकारी है । इसका उपयोग वृद्धावस्था तक श्रवणशक्ति को ठीक बनाये रखने में सहायक होता है ।

निरापद वटी

यह संक्रमण का नाश कर तद्जन्य बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी आदि लक्षणों से शीघ्र राहत दिलाती है ।

योगी आयु तेल

नाक और कान के रोगों में इसका उपयोग लाभदायी है । २-२ बूँद नाक में डालने से विषाणु-संक्रमण से सुरक्षा होती है ।

कफ सिरप

यह सभी प्रकार के श्वासनली के विकार, सर्दी, खाँसी, दमा तथा सूखी खाँसी में लाभकारी है । बच्चों व बड़ों - सभीके लिए उपयोगी है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

उत्तरायण ध्यान योग शिविर, अहमदाबाद

सत्संग-श्रवण

ऋषि प्रसाद सेवा का संकल्प

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

मातृ-पितृ पूजन दिवस : सांस्कृतिक व नैतिक चेतना का पुनर्जागरण

राजनांदगाँव (छ.ग.)

अमरावती (महा.)

नालासोपारा पूर्व-मुंबई

वालोड, जि. तापी (गुज.)

अलीगढ़ (उ.प्र.)

बल्लभगढ़ (हरि.)

गेवराई, जि. बीड (महा.)

कुरुक्षेत्र (हरि.)

जन-जन को वैदिक संस्कृति का ज्ञानामृत पिलाते पुण्यात्मा

प्रयागराज कुम्भ में लोक कल्याण सेतु व ऋषि प्रसाद विशेषांक, कैलेंडर एवं सत्साहित्य आदि का वितरण

सच्चरित्रता, सुसंस्कार हैं नारी की शान, यह दिव्य संदेश देता तेजस्विनी भव अभियान

सम्भाजीनगर (महा.)

करमतरा, जि. राजनांदगाँव (छ.ग.)

लुधियाना

राजकोट

ओजस्वी-तेजस्वी जीवन का मार्ग प्रशस्त करते योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम

गुना (म.प्र.)

जलगाँव (महा.)

चित्तरंजन (प.बं.)

उझानी, जि. बदायूँ (उ.प्र.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु | ऋषि प्रसाद | ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी